Sem. 5, DSE-2

"तोड़ती पत्थर" कविता की समीक्षा

छायावादी काव्य-धारा के प्रमुख कवि निरालाजी, जिन्होंने छायावादी प्रवृत्तियों का अतिक्रमण करते हुए प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी रचनाएँ भी की, हिन्दी कविता के सार्वकालिक महाकवि हैं। 1935 ई॰ में रचित "तोड़ती पत्थर" कविता निराला-काव्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यहाँ चित्रित मजदूरनी एवं वातावरण का बिम्ब-विधान जहाँ छायावादी प्रवृत्ति की ओर संकेत करते हैं, वहीं कविता का कथ्य या सन्देश इसे प्रगतिवादी कविता प्रमाणित करता है। अधिकांश आलोचकों ने इस कविता को प्रगतिवादी रचना मानते हुए कहा है कि साधारण और दलित वर्गों के प्रति जो सहानुभूति यहाँ व्यक्त है, वही प्रगतिवादी काव्य-धारा के केन्द्र में है।

प्रस्तुत कविता में ~~xxx~~ पत्थर तोड़ने वाली एक युवा मजदूरनी केन्द्र में है। यह मजदूरनी तपती हुई गर्म दुपहरी और झुलसाती लू के बीच सड़क किनारे पत्थर तोड़ने का काम कर रही है। मजदूरनी के इस चित्र को कवि ने एक विपरीत चित्र के समक्ष चित्रित किया है। मजदूरनी के ठीक सामने सड़क की दूसरी ओर ऊँचे भवन, ऊँची चारदीवारी और छायादार वृक्षों की कतार है। एक दूसरे के विपरीत चित्रित इन दो बिम्बों से मजदूरनी की विवश जिन्दगी और पूँजीपति वर्ग द्वारा किये जा रहे शोषण का भाव गंभीर और मर्मस्पर्शी हो उठता है। इतना ही नहीं, मजदूरनी के हाथों द्वारा अपने भारी हथौड़े द्वारा प्रहार के चित्र के ठीक बाद - "सामने तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार" का आना संकेतित करता है कि मजदूरनी अपने जोरदार प्रहार द्वारा शोषक पूँजीवाद का ध्वंस करना चाहती है।

कविता में दो शब्द-चित्र हैं। पहला चित्र मजदूरनी का है — "श्याम तन, भर बंधा ~~यौवन~~ यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन।"

और दूसरा चित्र मजदूरनी के शोषित व्यक्तित्व को धार प्रदान करता प्रकृति-चित्र है — "दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगी छा गयी,
प्रायः हुई दुपहर —"

किन्तु कविता के केन्द्र में कवि द्वारा ~~तोड़ती~~ पत्थर तोड़ती मजदूरनी को देखने और मजदूरनी का कवि को पलटकर देखने का वह भाव है, जो कवि का अनुभूत सत्य है। वह कवि को उस दृष्टि से देखा, जहाँ मार खाने के बाद भी नहीं रोने को विवश है। वह मजदूरनी की दृष्टि ज्योंही अट्टालिका की ओर जाती है, उसके हृदय का एक तार कहीं टूट जाता है। उस टूटे हृदय से जो व्यथा-वेदना की ध्वनि निकलती है, उसे कवि को वह मर्मस्पर्शी संगीत सुनाई पड़ता है, जैसा संगीत आजतक वह किसी सजे सितार से भी नहीं सुन पाया।

— "देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं।
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।"

निश्चय ही, कवि की संवेदना उस निर्बल श्रमिक वर्ग के साथ है जो स्वाभिमान से जीना जानते हैं, इसीलिए कवि ने मजदूरनी को कर्म के प्रति उसके मन की प्रीति, स्वीकार होने की बात की है। साथ ही, निराला जी शोषण करने वाली पूँजीवादी व्यवस्था के पाषाण-हृदय के खंड-खंड होने की कामना करते हैं। कविता के अंत मे उस सुघड़ ~~मजदूरी~~ मजदूरनी के एक क्षण काँपने तथा उसके माथे से गिरे पसीने की बूँद में कवि का प्रगतिवादी सौन्दर्य बोध स्पष्ट है।